

*****अब जीने दो उसे*****

चीख रही है वो सामने दयार पर
लुट रही उसकी इज़्ज़त भरे बाजार पर,
लेकिन रोको मत!! टोको मत!! (2)
अपनी रिकॉर्डिंग चल रही है चलने दो उसे।

वो कौन है दरिंदे? क्यों दबोच रखा है उसको?
क्यों बेहोश सी है वो, किसने क्या सोच रखा है उसको?
जाने दो!! क्या फ़र्क पड़ता है?(2)
रोज़ाना की कहानी चल रही है चलने दो उसे।

ज़रूर बेतरतीब कपड़े थे या फिर नखरे अजीब थे,
ज़रूर घर से बिन बताए निकली होगी या फिर उसके फूटे नसीब थे।
ज़रूर जानबूझकर ही उलझी होगी इनसे(2)
लड़कों की जवानी बोल रही है बोलने दो उसे

ऑफ़िस में ज़रूर झगड़ा किया होगा,
या कॉलेज में थप्पड़ जड़ा होगा।
ये लड़के यूं ही नहीं आए इस तक, इसने ज़रूर कुछ तो किया होगा
पुराना बदला निकल रहा है, निकलने दो उसे।

किसने कहा था स्कूटी चला और अकेली बाज़ार जा,
किसने कहा था इतना मेकअप लगा और शाम ढले बाहर जा।
घरवालों ने ज़रूर ध्यान नहीं दिया होगा,
उनकी गैर ज़िम्मेदारी निकल रही है निकलने दो उसे।

कोई कहता है कुंवारी है फिर तो पिता की जिम्मेदारी थी,
अरे नहीं नहीं ब्याहता है ये तो... पति की जिम्मेदारी थी।
अरे! आजकल की लड़की है तो खुद की भी तो जिम्मेदारी थी,
उसको मरता हुआ भी तो एक जिम्मेदार ही देख रहा है... देखने दो उसे।

चली थी लड़कों की बराबरी करने,
चारदीवारी छोड़ मीलों दूर कामगारी करने।
ज़रूर इन लड़कों के संग घूमती होगी(2),
इनकी दोस्ती मचल रही है, मचलने दो उसे।

अरे ये तो ज़माना ही खराब है,
लड़कों के साथ लड़कियों के हाथ में भी तो शराब है।
कौन जाने नशे में डूबी हो!(2),
इसकी नशा-खुमारी उतर रही है उतरने दो उसे।

कोई मुंह फेर रहा है तो कोई सिर झुका रहा है,
कोई मोबाइल निकाल रहा है तो कोई गाड़ी तेज भगा रहा है।
खुले आसमान तले कपड़े फट रहे उसके(2),

लोगों की आंखों का पानी उतर रहा है उतरने दो उसे।

उसकी अस्मत लूट उसे ज़िंदा जला दिया,
उसके भरोसे का यह जाने कैसा सिला दिया।
अधमरे बदन से आई एक आखिरी चीख,
आज उसकी हर उम्मीद जल रही है जलने दो उसे।

अभी चले हो कल कैंडल्स लेकर आओगे,
फ़ेसबुक ट्विटर और व्हाट्सएप पर चिल्लाओगे;
सरकार को गाली दोगे और झूठे आंसू बहाओगे (2)
बेशर्मी तुम्हारी भी छलक रही है झलकने दो उसे।

कल न्यूज़ पर फिर बहस कर करके देश बदलेंगे,
न्यूज़ डिबेट सुन बिस्तर पे पड़े पड़े सब के खून उबलेंगे;
और अगले दिन सब भूल जाएंगे(2),
बस सब की हवाबाजी निकल रही है निकलने दो उसे।

अरे देश वालों कुछ तो शर्म खाओ,
अगर हलक में भी पानी है तो उसी में डूब मर जाओ;
रिकॉर्डिंग पूरी हुई अब घर को जाते हो (2),
नजरें क्यों चुराते हो! हैवानियत तुम्हारी भी झलक रही है झलकने दो उसे।

अब और नहीं लिख सकता इस बेहूदगी का आलम,
अब और नहीं लिख सकता ऐसी नपुंसकता का आलम;
अब और नहीं! अब और नहीं,
मेरी कलम भी अब रो रही है रोने दो उसे।

अपनी नजरों से किसी लड़की के कपड़ों के पार झांक लेते हो,
उसके कपड़ों को देख बिन जाने उसके संस्कार आंक लेते हो;
कपड़ों में ढंकी आज भी नग्न हो रही सरे राह(2),
ये कैसा ओछापन निकल रहा है मत निकलने दो।

एक बच्ची से एक चाचा के प्यार में वासना,
एक लड़की को प्यार भरे पुचकार में वासना?
लोगों के स्पर्श में फर्क बताओ अपनी लाडो को (2)
आज दुलार के नाम पर बचपन छिन रहा उसका... मत छिनने दो उसे।

कौन कहता है लड़का लड़की में फर्क नहीं होता (2),
फर्क होता है!! पर ये फर्क बेशर्म नहीं होता;
उन्हें उनकी हदें बताओ और सम्मान सिखाओ (2),
ये समाज गिर कर उठ रहा है, फिर से मत गिरने दो उसे।

लड़की के ना करने पर उसे बाज़ारू बुलाते हो,
उस पर भी घर चैन ना आया तो उस पर एसिड फैंक आते हो;
जो गर बच गई जान तो किनारा कर लेता है ये समाज (2),

जाने कितनों के पाप वो अकेली झेलती है.. मत झेलने दो उसे।

कब तक इज्जत लूटोगे किसी की बहन किसी की बेटी और बीवी की,
कब तक लड़कों की पीठ थपथपा उकसाओगे... लूटने इज्जत उसकी खुद की बीवी की;
अरे किसी के दिल का टुकड़ा है तुम्हारी जागीर नहीं (2),
फिर क्यों तुम्हारी शराफत और ठहाकों में लुट रही है वो.. मत लुटने दो उसे।

कब तक बिकेगी वो सरे बाजार... कब तक नंगी होगी तुम्हारी नजरो में,
कब तक शाम होने पर नजरबंद होगी... और रात को बाहर जाने पर गिर जाएगी तुम्हारी नजरो में;
यह कैसी रिवायत चल रही है... मत चलने दो।

आज इस मंजर पे...
भीड़ के बीचों-बीच... अपनी अरमानों की राख लिए बैठी है उसकी मां,
राख में लिपटे हुए... खून में नहलाये हुए...
कुछ चिथड़े कपड़ों के...उसके जिस्म के.. हाथों में लिए बैठी है उसकी मां,
आंसू सूख कर खून बन गए हैं,
उसके संग सारी इंसानियत बिलख रही है.. मत बिलखने दो उसे।

राख हो गया शरीर!! पर रूह! अभी जिंदा है!....,
रूह! जो न तेलुगू है न हिंदी... न हिंदू न मुसलमान;
उसके साथ उस जैसी सैकड़ों रूहें... खड़ी हैं हाथ जोड़े... कि अब बस! अब बस और नहीं!...
कब तक? कब तक नोचोगे- मारोगे-जलाओगे लड़कियों को?
अब बस!
अब जीने दो उसे! जीने दो उसे!

:- अमित कुमार अमित